National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 04-08
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**चेतन पुरी**
शोधार्थी,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

**शोध निर्देशिका**
**डॉ. अंजना शर्मा**
सह आचार्य,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

**Correspondence:**
**चेतन पुरी**
शोधार्थी,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

# " राजस्थान के आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों की प्रवृत्तियाँ "
## (17वीं से 20वीं शताब्दी तक)

**चेतन पुरी, डॉ. अंजना शर्मा**

**शोध सारांश** - राजस्थान में 17वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक की सुदीर्घ एवं अविच्छिन्न संस्कृत महाकाव्य-रचना की परम्परा रही है। इस शोध पत्र में राजस्थान के उन मूर्धन्य कवियों के कृतित्व का विवेचन किया गया है, जिन्होंने न केवल संस्कृत की शास्त्रीय महाकाव्य-विधा को जीवित रखा, अपितु उसे नवीन विषयों, संदर्भों और सामाजिक चेतना से जोड़कर उसकी प्रासंगिकता को भी सिद्ध किया। इस कालखंड में राजस्थानी कवियों ने पौराणिक एवं धार्मिक आख्यानों के साथ-साथ, अपने आश्रयदाता राजाओं के जीवन-चरित, ऐतिहासिक घटनाओं, राष्ट्रीय महापुरुषों के आदर्शों, सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य और यहाँ तक कि साम्यवाद जैसी पाश्चात्य विचारधाराओं को भी अपने महाकाव्यों का विषय बनाया। साथ ही राजाश्रय से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों और अकादमियों तक के संरक्षण में यह परम्परा निरंतर पल्लवित होती रही। इन कवियों ने काव्य-शास्त्र के नियमों का पालन करते हुए भी विषय-वस्तु के स्तर पर अभूतपूर्व मौलिकता का प्रदर्शन किया, जो संस्कृत भाषा की जीवंतता और अनुकूलनशीलता का प्रबल प्रमाण है। यह शोध राजस्थान के इस गौरवशाली साहित्यिक अवदान को अकादमिक जगत के समक्ष प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयास है।

**कुंजी शब्द-** संस्कृत महाकाव्य, राजस्थानी साहित्य, राजाश्रय, चरित-काव्य, पौराणिक आख्यान, राष्ट्रीय चेतना, काव्य-शैली।

**भूमिका -** भारतीय वाङ्मय में महाकाव्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भारवि, माघ और श्रीहर्ष जैसे कवियों ने इस विधा को जिन ऊँचाइयों पर पहुँचाया, वह विश्व साहित्य के लिए एक मानदंड बन गया। सामान्यतः यह धारणा प्रचलित है कि संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग शास्त्रीय काल के साथ ही समाप्त हो गया, किंतु वास्तविकता यह है कि यह काव्य-धारा भारत के विभिन्न अंचलों में निरंतर प्रवाहमान रही। इसी गौरवशाली परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी राजस्थान प्रदेश में 17वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के मध्य देखने को मिलती है। राजस्थान, जो अपनी वीर-प्रसूता भूमि, शौर्यपूर्ण इतिहास, स्थापत्य कला और लोक-संस्कृति के लिए विख्यात है, उसका संस्कृत साहित्य के विकास में योगदान, विशेषकर महाकाव्य-रचना के क्षेत्र में, प्रायः अकादमिक चर्चा के केंद्र में नहीं रहा है। तथापि, पिछले चार सौ वर्षों में यहाँ संस्कृत महाकाव्य की एक सशक्त और अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान रही है। इस काल में कवियों ने न केवल प्राचीन आख्यानों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया, बल्कि समकालीन ऐतिहासिक घटनाओं, शासकों के जीवन-चरितों और आधुनिक सामाजिक-राजनीतिक विमर्शों को भी महाकाव्य के विस्तृत फलक पर प्रस्तुत किया। इस शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थान के 17वीं से 20वीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत महाकाव्यकारों और उनके कृतित्व का परिचय देना तथा उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस परम्परा के मूल तत्व क्या थे, समय के साथ विषय-वस्तु और शैली

में क्या परिवर्तन आए, और इन रचनाओं का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व क्या है। शोध-पत्र के मुख्य भाग में कवियों को उनके कृतित्व की विषय-वस्तु के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित कर उनका विवेचन किया गया है, जिसमें राजाश्रित ऐतिहासिक महाकाव्य, पौराणिक एवं धार्मिक महाकाव्य, तथा आधुनिक चेतना के महाकाव्य प्रमुख हैं।

**महाकाव्य -** भामह ने अपने काव्यालंकार में, दण्डी ने काव्यादर्श में, अग्निपुराण में और आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में महाकाव्य के लक्षणों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। साहित्यदर्पण में प्राप्त महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार है-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।
**शृङ्गारवीरशान्तनामेकोऽङ्गी रस इष्यते।**
**अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसंधयः।**
**इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।**
**चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।**
**आदौ नमस्क्रियाऽऽशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।11**
**क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम्।**
**एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।**
**नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।**
**कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।**
**नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।।**[1]

अर्थात् 1. महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है। 2. इसका नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय या वंशज कुलीन अनेक राजा होते हैं। 3, शृङ्गार, वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य उसके सहायक। 4. इसमें सभी नाटकीय सन्धियाँ होती हैं। 5. इसका कथानक ऐतिहासिक होता है या किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध। 6. इसमें चतुर्वर्ग- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन होता है और उनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है। 7. प्रारम्भ में देवादि को नमस्कार, आशीर्वाद या वस्तु.निर्देश होता है। कहीं दुर्जन, निन्दा और सज्जन, प्रशंसा भी रहती है। 8. प्रत्येक सर्ग में एक छन्द वाले पद्य रहते हैं, किन्तु अन्त में छन्द परिवर्तन हो जाता है। 9. इसमें आठ से अधिक सर्ग होते हैं, जो न बहुत छोटे और न बड़े होते हैं। 10. कहीं विभिन्न छन्दों वाले सर्ग भी होते हैं। 11. सर्ग के अन्त में भावी कथा का संकेत होता है। 12. इसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातः, मध्याह्न, मृगया, शैल, ऋतु, वन, सागर, युद्ध, प्रस्थान, विवाह, मन्त्र, पुत्र, उदय आदि का वर्णन रहता है। 13. ग्रन्थ का नाम, कवि, कथानक, नायक या प्रतिनायक के नाम पर रखना चाहिए। 14. सर्गों का नाम वर्णित कथा के आधार पर रखना चाहिए। आर्ष महाकाव्यों में सर्गों का नाम आख्यान पर निर्भर होता है। इन चार सदियों में राजस्थान के संस्कृत महाकाव्यकार विभिन्न विधाओं में इस प्रकार है।

**01 राजाश्रय और ऐतिहासिक महाकाव्य की परम्परा-** इस धारा के अंतर्गत वे कवि आते हैं जिन्होंने राजकीय संरक्षण में अपने आश्रयदाता शासकों, उनके वंश अथवा प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं पर महाकाव्यों की रचना की। ये काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि तत्कालीन इतिहास के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होते हैं। जोधपुर नरेश अजीतसिंह (1706-1724 ई.) के सभापंडित जगज्जीवन भट्ट इस परम्परा के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं । **उन्होंने "अजितोदयम्" नामक 32 सर्गों का एक वृहद् महाकाव्य रचा, जो महाराजा अजीतसिंह के जीवन पर आधारित है।**[2] इस कृति में नायक के चरित-वर्णन के साथ-साथ तत्कालीन राजस्थान की सामंती शूरवीरता, मुगल-मराठा संघर्ष और राजपूती आन-बान का मार्मिक चित्रण मिलता है। यह महाकाव्य 1664 से 1724 ई. तक के कालखंड की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं, तिथियों और व्यक्तियों की जानकारी प्रदान करता है। उनका दूसरा महाकाव्य "अभयोदयम्" 10 सर्गों में जोधपुर के अन्य नरेशों के जीवन पर प्रकाश डालता है। भट्ट ने काव्यशास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए भी ऐतिहासिक तथ्यों को काव्य के अनुरूप ढाला है। तैलंग ब्राह्मण परिवार में जन्मे रणछोड़ भट्ट का संबंध मेवाड़ के राजघराने से था और उन्हें कांकरोली व नाथद्वारा से गहरा संरक्षण प्राप्त था। **उनकी कालजयी कृति "राजप्रशस्ति महाकाव्य" है, जो मेवाड़ के संस्कृत साहित्य का एक अमूल्य ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।**[3] यह महाकाव्य राजसमुद्र झील की पाल पर शिलाओं पर उत्कीर्ण है। इसमें मेवाड़ के शासकों के इतिहास और राजसमुद्र के निर्माण का विस्तृत वर्णन है। महाकाव्य का आरंभ तांत्रिक मंत्रों से होता है, जो तंत्रशास्त्र पर कवि के अधिकार को दर्शाता है। जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के समकालीन श्रीकृष्ण भट्ट को महाराजा ने उनके विलक्षण पाण्डित्य के लिए कविकलानिधि की उपाधि दी थी। **उनका "ईश्वरविलास महाकाव्य" अपने आश्रयदाता सवाई जयसिंह के कार्यों और यश का वर्णन करता है**[4]। इस काव्य में सन् 1734 में जयपुर में हुए अश्वमेध यज्ञ का भी विस्तृत और प्रामाणिक चित्रण मिलता है।

भट्ट मेवाड जाति में उत्पन्न राजवैद्य श्री कुन्दनराम के पुत्र रूप में श्रीकृष्णराम भट्ट का जन्म 1848 ई. को जयपुर में हुआ। इन्होंने आयुर्वेद सम्बंधी रचनाओं के साथ **17 सर्गों में विभक्त 'कच्छवंशकाव्यम्'**[5] **नामक ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना भी की, जिसमें आमेर राजवंश से लेकर माधोसिंह द्वितीय तक का वर्णन उपनिबद्ध है।** इस रचना में वैदर्भी रीति को प्राथमिकता देते हुये, वीर रस अंगी रस रूप में तथा श्रृंगारादि अंगत्व में परिलक्षित है। महाराष्ट्र मूल के पर्वणीकर विद्वत्परिवार ने जयपुर में संस्कृत साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की। सीताराम भट्ट पर्वणीकर ने "जयवंशमहाकाव्य" की रचना की, जो 19 सर्गों में आमेर-जयपुर के कछवाहा वंश का क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत करता है। यह काव्य उस युग का दर्पण है जब मराठों के प्रभुत्व के कारण राजपूत शासकों की शक्ति क्षीण हो रही थी। कवि ने तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया है। **इन्होंने नलविलास, नृपविलास, राघवचरित्रम् महाकाव्यों की रचना भी की** [6]। **पं. श्री**

**सत्यनारायण शास्त्री ने 18 सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य' चन्द्रशेखरमहाकाव्यम्'**[7] की रचना की। जिसमें क्रान्तिकारी, देशभक्त चन्द्रशेखर का वर्णन करते हुये उस समय की युगचेतना का परिचय मिलता है। प्रेरणादायक चरित्र 'आजाद' का यहां विस्तृत वर्णन करते हुये आजाद शब्द की चिन्तन शक्ति की झांकी प्रस्तुत की है। जयपुर के महाराजा संस्कृत कॉलेज में विभागाध्यक्ष रहे पं. सूर्यनारायण शास्त्री जी ने **"मानववंशमहाकाव्यम्" की रचना की यह एक ऐतिहासिक महाकाव्य है**[8], जिसमें जयपुर के अंतिम शासक महाराज मानसिंह द्वितीय के इतिहास को रेखांकित किया गया है। इसके 17 सर्ग संस्कृत-रत्नाकर पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हुए थे। इन ऐतिहासिक महाकाव्यों ने न केवल अपने नायकों की कीर्ति का गान किया, बल्कि अपने समय के समाज, राजनीति और संस्कृति का प्रामाणिक दस्तावेज़ीकरण भी किया।

**02. पौराणिक, धार्मिक तथा चरित-परक महाकाव्य -** यह राजस्थान की संस्कृत महाकाव्य-रचना की सबसे विस्तृत और लोकप्रिय धारा रही है। इन कवियों ने रामायण, महाभारत, पुराणों के आख्यानों, देवी-देवताओं की लीलाओं तथा जैन संतों एवं अन्य महापुरुषों के जीवन को अपने काव्य का आधार बनाया। जैनकवि पं. मूलचन्द्र शास्त्री का जन्म 1903 में हुआ। इन्होंने राजस्थान स्थित श्री महावीरजी तीर्थस्थल के आदर्श महाविद्यालय में संस्कृत अध्यापन के साथ दिगम्बर स्वसेवा प्रदान की। **इन्होंने 14 सर्गात्मक "लौंकाशाहचरितम्"**[9] **नामक महाकाव्य लिखा** जिसमें स्थानैकवा-सिजैनसम्प्रदाय के संस्थापक श्री लौंकाशाह के जीवनचरित एवं उनके सिद्धान्तों का वर्णन है। गुलाबचन्द्र शर्मा पाटलेन्दु ने महाभारत के एक **उपेक्षित पात्र कर्ण के जीवन पर "महारथी (कर्णचरितामृतम् महाकाव्य)"**[10] नामक मौलिक महाकाव्य की रचना की। इस कृति में उन्होंने कर्ण को एक विराट दानवीर और उदात्त चरित्र के रूप में प्रस्तुत कर परम्परा से हटकर एक अद्भुत कृति का सूत्रपात किया। सीकर में जन्मे भूरामल जी, जो बाद में आचार्य ज्ञानसागर के नाम से विख्यात हुए, ने जैन दर्शन पर आधारित चार महाकाव्यों की रचना की। **इनमें 28 सर्गों का "जयोदयम्" (हस्तिनापुर नरेश जयकुमार पर आधारित)**, "**वीरोदयम्**", "**सुदर्शनोदयम्" और "भद्रोदयम्" (समुद्रदत्तचरितम्)**[11] **प्रमुख हैं।** उनकी रचनाएँ जैन धर्म के पंच महाव्रतों- सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह का संदेश देती हैं। जोधपुर में जन्मे नित्यानन्द शास्त्री ने **"श्रीरामचरि-ताब्धिरत्नम्" नामक एक अद्भुत चित्रकाव्य की रचना की।**[12] 14 सर्गों के इस महाकाव्य की विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक श्लोक के हर चरण के प्रथम अक्षर को मिलाने से वाल्मीकि रामायण की रचना हो जाती है। यह काव्य यमक जैसे अलंकारों से सुसज्जित अपनी प्रौढ़ शैली के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने "पुण्यश्रीचरितमहाकाव्य" में एक जैन साध्वी के जीवन का वर्णन किया है। फतेहपुर-शेखावाटी को अपनी कर्मस्थली बनाने वाले पं. शंकरलाल शर्मा वैद्य ने **"श्रीमद् अमृतचरितम्" महाकाव्य की रचना की**[13]। यह नाथ संप्रदाय के सिद्ध पुरुष श्री अमृतनाथ जी महाराज के जीवन पर आधारित एक आध्यात्मिक महाकाव्य है, जिसमें उनके जन्म से लेकर महानिर्वाण तक का चित्रण है। पं छत्रधर शर्मा - संस्कृत के चूडान्त इस मनीषी का जन्म 1914 टोंक के टोडा ग्राम में हुआ। इन्होंने कुम्भराय के जीवन चरित को वीररस के 11 सर्गों में **'कुम्भरायचरित-महाकाव्यम्'**[14] **लिखा।** एवं वीर रस में ही रायसिंह की विजय यात्रा का वर्णन 23 सर्गात्मक 'रायसिंहदिग्विजय-महाकाव्यम्' नामक महाकाव्य में किया। इस कृति में ऐसा प्रतीत होता है मानो इन्होंने किरातार्जुनीयम् का अनुसरण किया हो।

बीकानेर के डूंगर महाविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे पं. विद्याधर शास्त्री ने दो महाकाव्य रचे। **"हरनामामृतम्"** 16 सर्गों का शांत रस प्रधान महाकाव्य है, जिसमें उन्होंने अपने पितामह पं. हरनामदत्त शास्त्री के जीवन का वर्णन किया है। उनका दूसरा महाकाव्य "विश्वमानवीयम्" 9 सर्गों में मानव के विश्वव्यापक स्वरूप को प्रस्तुत करने वाली एक अभिनव रचना है। **इस महाकाव्य को खण्डकाव्य या महाकाव्य की श्रेणी में न रखकर नई विधा ह्रदगीतम् की संज्ञा दी।**[15] जालौर के भीनमाल महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत, प्रखर वैदुष्य के धनी पं श्री द्विजेन्द्रलाल शर्मा का जन्म 1917 में हुआ। **काव्यात्मक परिचय की दृष्टि में महीमहम् महाकाव्य**[16] **की रचना की।** इस 12 सर्गों के महाकाव्य में कच एवं देवयानी के पौराणिक वृतान्त को माध्यम बनाकर तथा शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या को प्राप्त करने के लिए आये हुये कच पर शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के अनुरक्त हो जाने का वर्णन है। सीकर के विद्वान् पं. श्री मदन शर्मा"सुधाकर" का जन्म 1926 को हुआ इनके प्रसिद्ध महाकाव्यों में उतरनैषधमहाकाव्यम्, सुदाम्नश्चरितकं महा-काव्यम्, श्रीरामभक्तिकल्लोलिनी महाकाव्यम्, रत्नोदयं महाकाव्यम्, **श्री तुलसीयशस्तिलकं महाकाव्यम्**[17] **की रचना की।** राजस्थान को कर्मस्थली बनाने वाले पद्म शास्त्री की प्रमुख रचनाओं में **संस्कृत महाकाव्य 'लेनिनामृतम्'**[18] **और हिंदी महाकाव्य 'महावीर-चरितामृत' शामिल हैं।** इनके अतिरिक्त, उन्होंने खंडकाव्य-स्वराज्यम्, हास्य-व्यंग्य शतक- सिनेमाशतकम् और चायशतकम्, व्यायोग- बंगलादेश-विजयः और लोकतन्त्र-विजयः, कथा संग्रह-विश्वकथाशतकम् (जिसमें कुल 380 कथाएँ शामिल हैं), वेदकाव्य-वेदविज्ञानामृतम्, यात्रावृत्त- मदीया सोवियत यात्रा, और पंचतंत्र का पद्यानुवाद पद्यपञ्चतन्त्रम् जैसी विविध कृतियाँ रचीं। उन्होंने कई ग्रंथों का अनुवाद और संपादन भी किया है। प्रोफेसर डॉ. सुभाष तनेजा का जन्म 13 अप्रैल, 1942 को टोंक में हुआ था। **तनेजा जी का प्रमुख महाकाव्य महाराणाप्रतापचरितम्**[19] **है।** अन्य महत्त्वपूर्ण

रचनाओं में संस्कृत निबन्ध पारिजात, ईश-काव्यं, संस्कृत भक्तिगीतं, कुरल चित्रणं, कश्मीर दर्शनं, अमेरिका-वैभवं, और उपन्यास हृदयेश्वरी-गृहेश्वरी प्रमुख हैं। उन्होंने विभिन्न देशों की यात्राओं पर आधारित ग्रंथों की भी सर्जना की है। इस धारा के अन्य प्रमुख कवियों में **पं. गोपीकृष्ण व्यास (साम्बसम्भवम् महाकाव्य**[20]**)**, **पं. प्रभुदत्त शास्त्री (गणपतिसम्भवम्**[21]**, भारतविजयम् )**, डॉ. रमेश चन्द्र शुक्ल (सुगमरामायणम् एवं श्रीकृष्णचरितम्) तथा पं. रामचन्द्र गौड़ आचार्य (श्रीहरिभक्तचरितम् ), पं. काशीनाथ पाण्डेय (श्रीमज्जवाहर-यशोविजयाख्या), पं. श्री गोस्वामी हरिराय (जरासन्धवध-महाकाव्यं), पं. बालकृष्ण दीक्षित(अजितचरित्रमहाकाव्यम्), पं. श्री भोलाशंकर व्यास (शक्तिजयमहाकाव्यम्), पं. रामदेव साहू (रामदेवचरितम् एवं चितौडचूडामणि), पं. श्री सत्यनारायण शास्त्री (भारतदिग्दर्शनम् एवं श्रीरामाश्वमेधीयम्) उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस विधा को समृद्ध किया।

**03. आधुनिक बोध एवं सामाजिक चेतना के महाकाव्य -** 20वीं शताब्दी में संस्कृत कवियों ने अपनी लेखनी को केवल पारंपरिक विषयों तक सीमित न रखकर आधुनिक विमर्शों और समकालीन यथार्थ से भी जोड़ा। यह प्रवृत्ति संस्कृत की जीवंतता और प्रासंगिकता का सबसे बड़ा प्रमाण है। शिवगोविन्द त्रिपाठी ने महात्मा गाँधी के जीवन से प्रभावित होकर 8 सर्गों के **"गान्धिगौरव-महाकाव्यं" की रचना की**[22]। इस महाकाव्य के माध्यम से कवि ने गाँधीजी के आदर्शों, अहिंसा, राष्ट्रीय स्वातंत्र्य और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी। बाडमेर के विद्वान् पं. श्रीराम दवे के साहित्यिक योगदान में **भृत्याभरणम्**, **राजलक्ष्मीस्वयंवरम्**, **साकेत-संगरम्**[23] जैसे महाकाव्यों को गिना जाता है। भृत्याभरणम् महाकाव्य में आधुनिक चकाचौंध तथा स्वार्थलिप्सा के दृष्टिकोण ने जो देश की हालत बना रखी है उससे उपजा कवि क्षोभ इसमें वर्णित है। राजलक्ष्मीस्वयंवरम् महाकाव्य 18 सर्गात्मक है जिसमें लोकतंत्र को ईश्वर की युग परिवर्तन योजना मानते हुये निर्वाचन के माध्यम से होने वाले शासक के चुनाव को राजलक्ष्मी का स्वयंवर कहा है। साकेतसंगरम् महाकाव्य 15 सर्गो से युक्त है जो राम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन को लेकर वीर रस में लिखा गया है। पं. नवलकिशोर कांकर के पुत्र डॉ. नारायण कांकर का जन्म 1930 में हुआ। **इन्होंने 'रचनाभ्युदयम् महाकाव्यम्'**[24] **की रचना की।** 21 सर्गो में विभक्त इस महाकाव्य में वर्तमान परिवेश की मनोरम झांकी के साथ विभिन्न विषयों का सम्मिश्रण कर भिन्न भिन्न सर्गो का पृथक्-पृथक् नामकरण किया है। इस महाकाव्य में मम्मट का काव्य प्रयोजन पूर्णतया सफल सिद्ध हुआ है। आचार्य मधुकर शास्त्री का **महाकाव्य श्रीमहावीरसौरभम्**[25] **है।** अन्य महाकाव्य 'पथिककाव्यम' राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। इसका नायक पथिक नामक एक नवयुवक है जो देशवासियों के दुःख से व्यथित होकर सांसारिक सुख त्याग देता है और दीन-हीनों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर देता है। डॉ. शिवदत्त चतुर्वेदी का **'चर्चा महाकाव्य' 24 सर्गों में रचित एक विलक्षण कृति है।**[26] इस महाकाव्य में कवि ने राजेंद्र प्रसाद, सी.वी. रमण, चंद्रधर शर्मा गुलेरी और भारतेन्दु जैसे राष्ट्रीय महापुरुषों एवं विद्वानों को अलग-अलग सर्गों का नायक बनाकर उनके चरित्र का चित्रण किया है। इस धारा के कवियों ने यह सिद्ध किया कि संस्कृत केवल देववाणी या अतीत की भाषा नहीं, बल्कि आधुनिकतम विचारों, विमर्शों और सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम एक जीवंत भाषा है।

**राजस्थान के आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों की प्रवृत्तियाँ ( 17वीं से 20वीं शताब्दी तक ) -**

**1. परम्परा की निरंतरता और विषय-वस्तु का विस्तार -** यह अध्ययन इस धारणा को पुष्ट करता है कि राजस्थान में महाकाव्य-रचना की परम्परा चार शताब्दियों तक अविच्छिन्न रूप से चलती रही। जहाँ 17वीं-18वीं शताब्दी में रचित महाकाव्य मुख्यतः राजाश्रित एवं ऐतिहासिक थे (यथा- अजितोदयम्, राजप्रशस्ति), वहीं 20वीं शताब्दी में विषय-वस्तु का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। कवियों ने पौराणिक आख्यानों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया (यथा- महारथी), संतों का जीवन-चरित लिखा (यथा- श्रीमद् अमृतचरितम्), और महात्मा गाँधी, लेनिन से लेकर समकालीन नौकरशाही और लोकतांत्रिक राजनीति तक को अपने महाकाव्यों का विषय बनाया। यह संस्कृत की अनुकूलनशीलता और रचनात्मक ऊर्जा का परिचायक है।

**2. शास्त्रीयता एवं मौलिकता का समन्वय -** इन कवियों ने महाकाव्य के शास्त्रीय नियमों, जैसे सर्गबद्धता, धीरोदात्त नायक, मंगलाचरण, छंद-वैविध्य तथा प्रकृति-वर्णन आदि का निष्ठापूर्वक पालन किया। किंतु इस शास्त्रीय ढांचे के भीतर उन्होंने मौलिक कथानकों और नवीन विचारों को सफलतापूर्वक समाहित किया। श्रीराम दवे का नौकरी को नायिका मानकर महाकाव्य रचना या शिवगोविन्द त्रिपाठी का गाँधीजी के जीवन पर महाकाव्य लिखना इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

**3. विविध काव्य-शैलियों का प्रयोग -** इन रचनाओं में काव्य-शैली की विविधता भी दर्शनीय है। एक ओर नित्यानन्द शास्त्री के "श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्" जैसा कठिन चित्रकाव्य है, जो कवि के पाण्डित्य का प्रमाण है तो दूसरी ओर अधिकांश कवियों ने सरल, सरस, प्रसाद एवं माधुर्य गुणयुक्त वैदर्भी रीति को अपनाया ताकि काव्य का संदेश सुगमता से पाठकों तक पहुँच सके।

**4. संस्थागत संरक्षण में परिवर्तन -** 17वीं से 19वीं शताब्दी तक कवियों को प्रमुख रूप से राजघरानों का संरक्षण (राजाश्रय) प्राप्त था। परंतु स्वतन्त्रता के बाद 20वीं शताब्दी में यह परिदृश्य बदला। अनेक कवि आधुनिक शिक्षण संस्थानों, जैसे- जयपुर का महाराज संस्कृत कॉलेज, जोधपुर विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आदि से संबद्ध थे। इसके अतिरिक्त, राजस्थान संस्कृत अकादमी जैसी संस्थाओं ने माघ पुरस्कार आदि के माध्यम से कवियों को सम्मानित और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**निष्कर्ष -** राजस्थान प्रदेश ने 17वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य संस्कृत महाकाव्य की परम्परा को न केवल जीवित रखा, अपितु उसे समकालीन बनाकर समृद्ध भी किया। यहाँ के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह दर्शाया कि संस्कृत की रचनात्मकता केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वह वर्तमान के साथ संवाद स्थापित करने और भविष्य को दिशा देने की क्षमता भी रखती है। ऐतिहासिक चरित-काव्यों से लेकर सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य तक, और पौराणिक आख्यानों से लेकर अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्वों के जीवन-चरित तक, इन महाकाव्यों का फलक अत्यंत व्यापक है। ये कृतियाँ केवल साहित्यिक महत्त्व ही नहीं रखतीं, बल्कि अपने युग के इतिहास, समाज, संस्कृति और वैचारिक आंदोलनों का जीवंत दस्तावेज़ भी हैं। पं. सीताराम भट्ट पर्वणीकर, आचार्य ज्ञानसागर, विद्याधर शास्त्री, डॉ. पद्मशास्त्री और श्रीराम दवे जैसे अनेक कवियों का अवदान अखिल भारतीय स्तर पर मान्यता का अधिकारी है। तथापि, यह एक विडंबना है कि इनमे से अधिकांश कृतियाँ और कृतिकार आज भी व्यापक पाठक वर्ग और अकादमिक जगत की दृष्टि से ओझल हैं। अतः यह आवश्यक है कि इस समृद्ध साहित्यिक निधि के संरक्षण, संपादन, अनुवाद और गहन अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि राजस्थान की यह गौरवशाली संस्कृत-साधना अपने समुचित सम्मान को प्राप्त कर सके और नई पीढ़ी के शोधार्थियों एवं साहित्य-प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** –


[1]साहित्यदर्पण परिच्छेद 06

[2]श्रीजगज्जीवनभट्ट-अजितोदयमहाकाव्यम्, सम्पादक-पं नित्यानन्द शास्त्री, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ. परिचय

[3]श्रीरणछोडभट्टप्रणीतम् , राजप्रशस्तिः महाकाव्यम्, सम्पादक- डॉ मोतीलाल मेनारिया, पृ. भूमिका

[4]श्रीकृष्णभट्टविरचितम्-ईश्वरविलासमहाकाव्यम्, सम्पादक-भट्टमथुरा नाथशास्त्री, रा. पु.म. जयपुर पृ. 55

[5]डॉ लक्ष्मी शर्मा, श्री कृष्णराम भट्ट की संस्कृत साहित्य की देन, शोध ग्रन्थ, राविवि. जयपुर 1979

[6]सीताराम भट्ट पर्वणीकरकृत् नलविलासमहाकाव्यम्, सम्पादक-रूपनारायण त्रिपाठी, परिचय खण्ड, पृ. 32

[7]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र , जयपुर पृ. 402

[8]डॉ प्रभाकर शास्त्री, आमेर जयपुर का संस्कृत वांगमय, जयपुर, पृ. 355

[9] डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, पृ. 282

[10]गुलाबचन्द्र चूलेट, महारथी श्रीकर्णचरितामृतम् महाकाव्यम्, दिग्विजय प्रकाशन जयपुर, प्राक्कथन पृ. च

[11]आचार्य ज्ञानसागर, वीरोदय महाकाव्य, सम्पादक-हीरालाल सिद्धान्त, अजमेर, परिचय पृ. कमलकुमार जैन

[12]डॉ. मधुबाला शर्मा, राजस्थान के प्रमुख मनीषी , रचना प्रकाशन जयपुर पृ. 40

[13]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र , जयपुर पृ. 373

[14]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, जयपुर पृ. 149

[15]विद्याधर शर्मा, विधारग्रन्थावली, विश्वमानवीयकाव्यम्, राज. साहित्य अकादमी उदयपुर

[16]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, जयपुर पृ. 169

[17]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, जयपुर पृ. 253

[18]पद्म शास्त्री, लेलिनामृतम्, विश्वेश्वरानन्दवैदिकशोधसंस्थानम्, होशियारपुर, 1973 उपोद्घात पृ. 15

[19]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, जयपुर पृ. 382

[20]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, जयपुर पृ. 84

[21]बिन्दु साहु, शोधपत्र- गणपति सम्भवम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, GISRRJ, Volume 2 ए श्रंद 2019 पृ. 40

[22]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, जयपुर पृ. 485

[23]डॉ. मधुबाला शर्मा, राजस्थान के प्रमुख मनीषी , पृ. 73

[24]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, जयपुर पृ. 188

[25]आचार्य मधुकर शास्त्री, श्री महावीर-सौरभम्, प्रकाशक-जैन श्वेताम्बर पेटी कोटा , जयपुर पृ. 08

[26]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, जयपुर पृ. 360